ISSN:2583-8849

सोमनाथ

1-

छतिया पै रंच कुच कोर अंकुरित भई,
देह दुति चंपक सुमन दल की सी है।
बैननि पियूष मधुराई बरसैगी डीठि,
खंजन की रीति लहिबे को ललकी सी है।
लंक लघु ह्वै कै लहकैगी दिन चारिक में,
सोमनाथ गति मंजुता कौ मुलकी सी है।
सुनिए सुजान द्वै तें भावती के अंग,
जोबन की तनक झलक झलकी सी है॥

2-

सुंदर सरस केलि मंदिर में चंदमुखी,
प्रीतम के संग रति रंगहि करन लागी।
आनंद तरंग अंग-अंग तें उठत नीकें,
सौमनाथ यौं ही सब रैनि निबरन लागी।
तऊ छिन बिछुल्यौ न चाहै रति चाहै चित,
श्रुत अरबिंद ते सुगंध निकरन लागी।
चौंकि हहरानी अरुनोदय ललाई हेरि,
प्यारी के वदन पियराई उघरन लागी॥

3-

कंत अवनी कौ गुनवंत ग़ाज़ी आज़म खाँ,
ईद मान इंद्र कौ बिलास परसत है।
बाजत मृदंग बीन मधुर मधुर मंजु,
तान की तरंगन सों रंग दरसत है।
कुंदन लता सी खासी काम कंदला सी बाल,
नृत्यत अनंत अंग रूप सरसत है।
नज़र बिलंद सौ गयंद बकसत रीझि,
करन सौ कंचन कौ मेह बरसत है॥

4-

पंडित परम गुन पंडित बिबुध जिमि,
उच्चरत बिमल कबित्त गुनबेस के।
नृत्यत अनेक नृत्य कारक अनंत गति,
गावत सुघर सम किन्नर सुभेस के॥
सोमनाथ कहत मुबारकी चहूँधा चारु,
चायन सो चतुर नरेस देस-देस के।
आज़म खाँ ग़ाज़ी की बिलोक बकरीद आज,
फीके होत सुघर समाज अमरेस के॥

5-

सुबरन रंग सुकुमारि सवै भावनि सों,
अंगनि उछाह की लहरि लहरी रहति।
भूषन बसन चारु दसनि हसनि और,
नैननि में प्रेम रस प्यास गहरी रहति।
सोमनाथ प्यारे अलि भाँवरे भरत रहै,
चहूँधा चकोरनि की चौकी ठहरी रहति।
सरद कौ चंद कैसे कहौं मुख चंद सम,
छहूँ रित जाकी छवि छटा छहरी रहति॥

6-

कौन जानैं हित ह्वै निहारी तुम ता दिन तैं,
भूले सुधि बुधि कान्ह घूमि गिरि जात हैं।
औरौ आगि जागै अति सीर उपचारनि सौं,
उनको न चैन मेरे हाथ ठिरि जात हैं॥
सोमनाथ धीर न धरत तरफत खरे,
जो पै गुरु लोगनि मैं नेकु घिरी जात हैं।
रोवै बार-बार हित बाढ़यौ बार-बार प्यारी
तेरे द्वार आवैं अनदेखै फिरि जात हैं॥